चाणक्य के

9 सूत्र

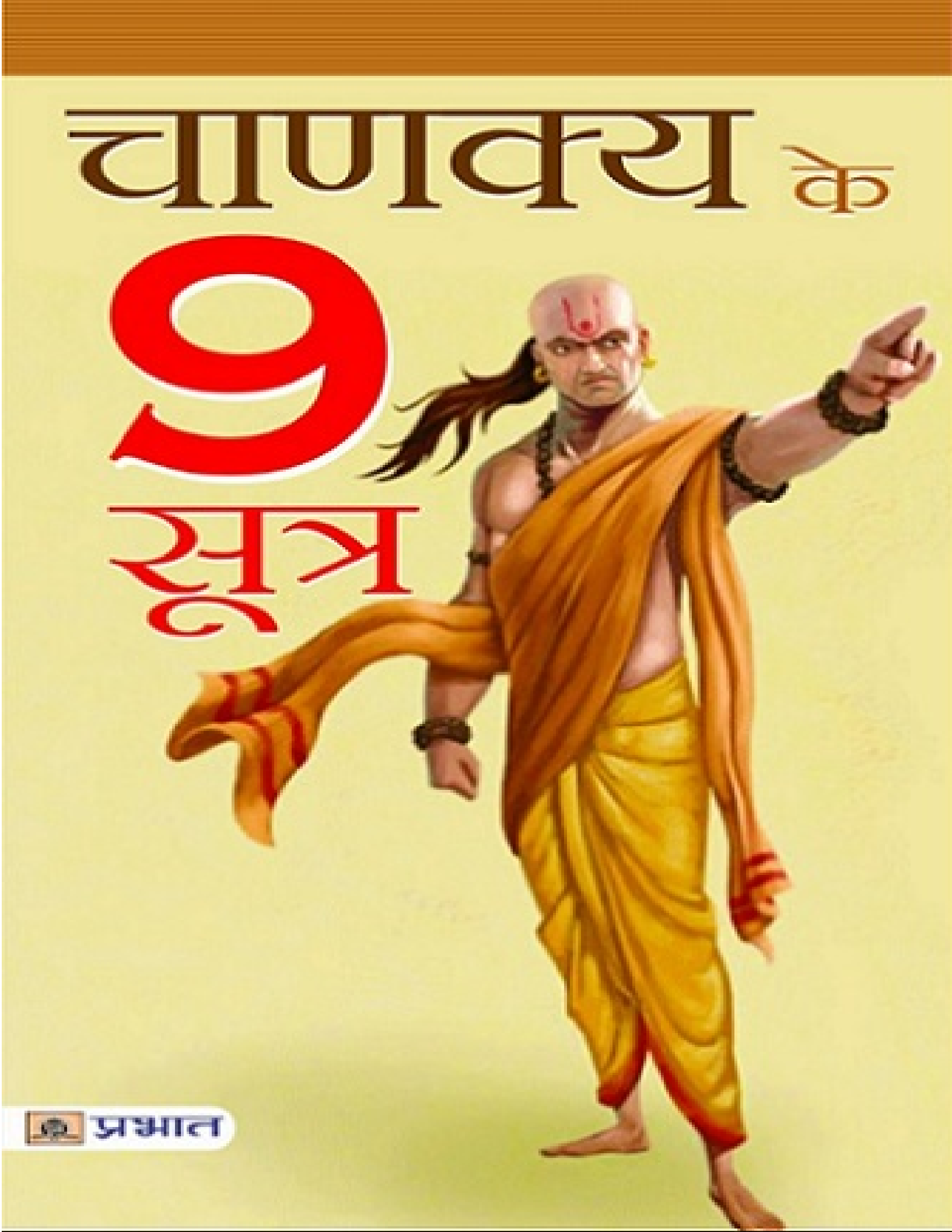

प्रभात

उन्हें पहचानने के लिए

चाहिए होगी आपको

बहुत ही

सोची समझी हुई समझ

जो आपको
प्रेरणा
और
बुद्धि देगी

आपकी तरफ
फ्रैंकी गई उनकी चालो को
समझने की

पर ये सब कुछ इतनी सरलता से समझ नहीं आएगा

इसके लिए

आपको अपनी सोच का
विस्तार करना होगा

और ये पुस्तिका आपकी
एसा करने में सहायता करेगी।

एक कहावत ऐसी है
जो केवल और केवल राक्षसों और असुरों में प्रचलित है

और वो ये है कि असुर अपनी किस्मत खुद लिखते हैं।

अर्थात - ना तो वो किसी अच्छाई को मानते हैं।
ना कभी मानेंगे, और ना कभी मानने की चेष्टा करेंगे।

उनका मानना है कि उनका अस्तित्व उनके खुद के कारण है।
ऐसी सोच रखने वाले असुर
आपके जीवन में आपको भी कभी मिल सकते हैं।

जब भी ऐसे किसी व्यक्ति से आप का सामना हो
तो अपनी बुद्धि का प्रयोग कर
उस व्यक्ति से दूर रहे।

क्योंकि ऐसी संगति का प्रभाव आप पर पड़ सकता है
और हो सकता हैं कि आप भी बिगाड़ जाए।

इसलिए

सावधान रहें !

और ऐसे लोगों से बचकर दूर रहें।

एक शिष्य का आचार्य चाणक्य को नमन।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव ।
त्वमेव सर्वम् मम देव देव ॥

1 व्यक्ति का असली मूल्य

ये सारी स्थिति तब की है जब चंद्रगुप्त को आचार्य चाणक्य के बारे में कुछ भी पता नहीं था। ना ही उसे अखंड भारत के स्वप्न के बारे में पता था। ना ही धनानंद के क्रूर और दुराचारी होने के बारे में।
किंतु आचार्य चाणक्य ने ठान रखा था कि उन्हें चंद्रगुप्त की परीक्षा लेनी है।
ये देखने के लिए कि क्या वो इस महत्वपूर्ण लक्ष्य को पूरा करने के योग्य है या नहीं
इसीलिए वो उसे व्यापारी से खरीदकर तक्षशिला लेकर जाना चाहते थे।
पर व्यापारी भी बहुत चालाक था।
उसने कई अड़चने डाली चंद्रगुप्त को अपनी कैद में बंधी बनाए रखने के लिए
किंतु आचार्य चाणक्य तो अचार्य चाणक्य थे उन्होंने चंद्रगुप्त को व्यापारी की कैद से निकाल ही लिया।

यदि इंसान को किसी चीज़ का मूल्य पता हो।
उस चीज़ की अहमियत पता हो
तो फिर इंसान उस चीज़ को हासिल करने के लिए
पाने के लिए क्या कुछ नहीं कर जाता।
इसी प्रकार से आचार्य चाणक्य को
एक हीरे की खान का पता चल गया था।

उन्हें पता चल गया था कि किस तरीके से चंद्रगुप्त राजा बनने के काबिल है
और किस तरीके से उसका न्याय प्रिय व्यवहार भारतवर्ष के सभी लोगों के काम आ सकता है

इसीलिए उन्होंने बिना देर किए
उसे व्यापारी की कैद से छुड़ाने का निर्णय लिया।

बिल्कुल इसी प्रकार से आपको भी अपने जीवन में चाहे कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों ना करना पड़े किंतु
आपको ऐसे कई बार निर्णय लेने पड़ेंगे।
ऐसी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा जिनके बारे में शायद आपको कभी कोई आभास ना हो
किंतु
उस समय आपको भी ये समझने की आवश्यकता होगी
कि एक व्यक्ति का असली मूल्य
इस बात से नहीं होता
कि वो कैसा दिखता है
या वो कहां रहता है

अपितु इस बात से होता है
कि उसका स्वभाव कैसा है।
की उसकी असली पहचान क्या है,
उसकी अच्छाइयां क्या है
और क्या वो अपनी मातृभूमि के प्रति ,
अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित है।
क्या आपने उस उद्देश्य के लिए समर्पित है वो
जिस उद्देश्य के लिए उसका जन्म हुआ है।

क्योंकि एक व्यक्ति का असली मूल्य
उसकी सोच
उसके व्यवहार
और
उसके स्वभाव से होता है
ना कि उसकी सूरत और हालातों से !

2 वचनों का मोल

व्यापारी की कैद में चंद्रगुप्त
कुछ इस प्रकार से
फसा था। -

व्यापारी ने चंद्रगुप्त के मामा का
कर्जा चुकाने के बदले
चंद्रगुप्त से ये चालाकी से वचन ले लिया था कि इसके बदले व्यापारी जो भी उसे
कहेगा वो उसे करना पड़ेगा।

चंद्रगुप्त के मामा का
सैनिकों को कर देने के बाद , व्यापारी ने चंद्रगुप्त को उसका वचन याद दिलाते हुए
बोल दिया कि अब चंद्रगुप्त को उसका गुलाम बनके रहना पड़ेगा।

और क्योंकि चंद्रगुप्त ने वचन दिया था इसलिए वो इंकार नहीं कर पाया।

बिना सोचे समझे
दिए जाने वाले वचनों
का यही परिणाम होता है।

कि कोई भी आपका
फायदा उठाने के लिए
तैयार हो जाता है।

सिर्फ इसलिए क्योंकि आपने कुछ ऐसे शब्दों

का प्रयोग कर दिया
जो आपको करना नहीं चाहिए था

क्योंकि आपने कुछ ऐसे वचन दे दिए
जिन्हें देने से पहले
आपको सोचना चाहिए था।

बिना परिणाम की चिंता किए
जब हम बिना सोचे समझे किसी भी निर्णय पर आते हैं
तो अवश्य ही वो निर्णय
हमारे लिए बहुत ही दुखद साबित होता है

और ये हमे नियति भी सिखाती है
कि किस प्रकार से हम सभी मनुष्यों को
ये बार-बार समझाने की बहुत आवश्यक है

कि हम सभी को कभी भी
किसी को भी बिना सोचे समझे
कोई भी वचन नहीं देना चाहिए।

क्योंकि हर कोई आपके जितना
साफ दिल वाला नहीं होता।

लोग आपके वचनों का
गलत उपयोग करने की चेष्टा अवश्य करेंगे।

इसीलिए सावधान हो जाएं !
और गलती करने की जरूरत ही क्या है ?

गलती को कभी होने ही ना दे।

ना ही कभी इस गलती के माया जाल में फंसे
और ना ही कभी किसी को बिना सोचे समझे वचन दे।

3 स्तिथि को समझने की एहमीयत

चंद्रगुप्त ने शिकारी के चंगुल से छुटकर
अपनी परिक्षा को पूरा करने का
पहला पड़ाव पार कर लिया था
किंतु चंद्रगुप्त कोई साधारण बालक नहीं था।

उसने भी प्रतिज्ञा कर ली
कि वो आचार्य चाणक्य को
उसे उसकी माँ से दूर तक्षशिला ले जाने नहीं देगा।

और चंद्रगुप्त ने कहा कि मेरा शरीर
आपका गुलाम बन सकता है
किंतु मेरी आत्मा !
मेरी आत्मा गुलामी कभी स्वीकार नहीं करेगी।
आचार्य ! कभी नहीं !

चंद्रगुप्त के कठोर वचनों के बावजूद आचार्य चाणक्य चंद्रगुप्त और अपने शिष्य को लेकर
मगध से निकल पड़े। व्यापारि के भेस में
ताकि सैनिक उन्हे पहचान ना पाए।

इस घटित घटना क्रम से हमें ये पता चलता है कि
किस प्रकार से आप जिस उद्देश्य के लिए
जिस लक्ष्य के लिए आगे बढ़ रहे हैं
उसके बारे में आपको पता होना
कितना ज्यादा आवश्यक है

क्योंकि चंद्रगुप्त को इस बात का
कोई आभास ही नहीं था।
पता ही नहीं था उसे कि वो किस कारणवश
धनानंद के विरुद्ध लड़ना जा रहा है
और किस कारणवश उसे
आचार्य चाणक्य का साथ देना चाहिए
इसीलिए वो पूरी तरह से
आरंभ में उस अभियान में भागीदार नहीं बन पा रहा था

क्योंकि उसे अपने उद्देश्य के
मकसद का इल्म ही नहीं था।
इसीलिए आपके जीवन में भी ये अनिवार्य है
कि यदि कोई भी ऐसी स्थिति हो ,
यदि आपको भी जीवन में कोई भी
एक लक्ष्य प्राप्त करना हो तो ये अवश्य समझ ले
कि उस लक्ष्य को प्राप्त करने की कीमत क्या होगी

और उस लक्ष्य को प्राप्त करना

आपके लिए
आवश्यक क्यों है ?

क्योंकि वही क्यों का जवाब
आपको जिंदगी में आगे बढ़ने की
हिम्मत और ताकत देखा।

और वही कारण होगा
जो आपको हर कदम पर
आगे बढ़ते रहने के लिए उत्साहित करेगा।

सच की राह पकड़ने के लिए
और आगे बढ़ते रहने के लिए
चाहे फिर जो भी कुछ भी क्यों ना करना पड़ जाए

किंतु वही क्यों
आपको आगे बढ़ाएगा।

4 पूर्ण सच ज्ञात होना

किंतु चंद्रगुप्त रात होते ही
वहाँ से चुपचाप भाग निकला

और हालांकि आचार्य चाणक्य , उनका शिष्य और चंद्रगुप्त मगध की सीमा से काफी दूर निकल चुके थे

किंतु फिर भी
रास्ते में जब चंद्रगुप्त को भागते हुए
मगध के सैनिक मिले
तो चंद्रगुप्त ने स्वयं जाकर मगध के उन सैनिकों को बता दिया कि आचार्य चाणक्य व्यापारी के वेष में कहां छुपे हैं

और उन सैनिकों ने आकर आचार्य चाणक्य को पकड़ बंधी बना लिया।
और मगध ले गए
और मगध ले जाने के बाद
आचार्य चाणक्य का धनानंद से
आमना सामना हुआ।

आचार्य चाणक्य के जीवन के इस अध्याय में से
हमें ये सीखने को मिलता है
कि किस तरीके से चाहे बालक ही क्यों ना हो
किंतु उसे समझाना अत्यंत आवश्यक है

कि उसे किस उद्देश्य के लिए तैयार किया जा रहा है और किस कारणवश उसका
उस उद्देश्य में पूर्ण समर्पण होना अनिवार्य है।

चंद्रगुप्त को बिल्कुल ज्ञात नहीं था
कि धनानंद कैसा राजा है। उसके आसपास जो घटनाएं घटित हो रही हैं, वे किस वजह से हो रही हैं
और क्योंकि उसे इस बात का कोई इलम ही नहीं था कुछ पता ही नहीं था इसीलिए उसके निर्णय
अजीब विचारों से प्रभावित हो रहे थे

पर भविष्य में जाकर जब आचार्य चाणक्य ने चंद्रगुप्त का सारी सत्यता से परिचय कराया तब जाकर
उसने सच का साथ देने का निर्णय लिया।
और लग गया मातृभूमि को एक करने के अभियान में।

कहने का तात्पर्य ये है कि -
अगर व्यक्ति सही ही चाहे क्यों ना हो
किंतु उसे ये आभास ना हो
की वे किस दिशा में जा रहा है
और क्यों जा रहा है
तो उसका वो अभियान विफल भी हो सकता है।

क्योंकि जब तक व्यक्ति को यही ज्ञात नहीं है
कि वो राह पर चल ही क्यों रहा है ?
तब तक वो कैसे अपने पूरे समर्पण से चल पाएगा
उस रास्ते पर और कब तक चल पाएगा
बिना ये जाने कि उसकी मंजिल उसे कहाँ
और क्यों लेकर जा रही है।

इसीलिए आप किसी भी लक्ष्य को चाहे
पर आपको उस लक्ष्य तक पहुंचने का कारण
और उसकी अहमियत की आवश्यकता
आपको हमेशा याद होनी चाहिए
ताकि कभी भी आप उस रास्ते से भटके
तो वो अहमियत और उस लक्ष्य तक पहुंचने का कारण आपको भटकने से रोके

और आपको अपने सही मार्ग पर
दोबारा से लौटा ले आए।

5 सम्मान सर्वोपरी हैं

धनानंद ने चंद्रगुप्त को पुरस्कार में
स्वर्ण के बहुत सारे सिक्के दिये।
और फिर धनानंद आचार्य चाणक्य के पास गया और धनानंद ने बड़ी ही क्रूरता से
आचार्य चाणक्य को पुकारते हुए कहा - ये !
ये है तुम्हारी शिखा ! तुम्हारी प्रतिज्ञा की साक्षी !
काट दे इसे जड़ से।
या फिर तुमहे भी मृत्युदंड चाहिए ?
जो तुम्हारे पिता को हमारे पिता से मिला था।
धनानंद के ये कहते ही आचार्य चाणक्य ने
धनानंद की ओर देखा आश्चर्य में।
धनानंद ने कहा - हाँ ! यही ठीक रहेगा।
ऐसे क्या देख रहा है ब्राह्मण ?
ये मत सोच कि हमने पहचाना नहीं तुझे

तु उसी चाणक का बेटा है ना ?
जिसने हमारे पिता महाराज नंद के सामने।
दुस्साहस करने का अपराध किया था।
और यही इसी जगह पर हमारे पिता महाराज नंद
ने तेरे पिता का सर धड़ से अलग कर दिया था।
देख ले चाणक्य !

इतिहास कैसे अपने आप को दोहराता है !
वही स्थल है , वही स्थिति।
परंतु हम , हम तुझे जीवन की भिक्षा दे सकते हैं
यदि तु हमें अपनी शिखा दे दे

ये सुनकर नाइ
आचार्य चाणक्य की शिखा काटने आ रहा था। किंतु आचार्य चाणक्य ने उसे क्रोध से देखा
और उनके क्रोध को देखकर वो नाई पीछे हट गया।

और फिर आचार्य चाणक्य ने कहा कि -
धनानंद ! मृत्यु और अपनी शिखा के चुनाव में
चुनाव का जब जब प्रश्न आया है
ब्राह्मण ने अपनी शिखा को चुनकर
मृत्यु को गले लगाया है।
उड़ा दे मेरा सर ! पर याद रखना !
मेरी प्रतिज्ञा मेरे बाद भी जीवित रहेगी।
ये सुनकर धनानंद जोर से चिल्लाया
मृत्युदंड !
और अपने सिंहासन पर जाकर बैठ गया।

धनानंद एक क्रूर राजा
जो कि आपके जीवन में प्रकट होने वाले
कई पापियों को दर्शाता है।

आचार्य चाणक्य की भांति हो सकता हैं
की आपको भी किसी ऐसी गंभीर परिस्थितियों में
ऐसे पापियों का सामना करना पड़ जाए ,

तब आपको डरना नहीं है।
आपको भी आपनी पूरी हिम्मत से
उन राक्षसों का सामना करना है।
चाहे कितनी ही कठिनाइयां क्यों ना आए।
चाहे कितनी ही गंभीर परिस्थितियों का सामना क्यों ना करना पड़े। लेकिन आपको डरना नहीं है।
हारना नहीं है आपको
क्योंकि जिंदगी का असल मकसद सच्चाई
और गर्व से जीने में है ना कि दबके रहने में।
हाँ सच की राह कठिन अवश्य है,
हो सकता है आपका हर कोई साथ ना दे। इस राह पर , पर एक दिन अवश्य आपके उस सत्य को लोग जानेंगे जरूर और आपको प्रेरणा बनाकर आप की मिसाल देकर और लोगों को अवश्य ही हिम्मत मिलेगी इस सच के रास्ते पर चलने में।
धनानंद ने आचार्य चाणक्य को एक अवसर दिया अपनी शिखा काटने का जिससे उनको जीवनदान मिलता। किंतु आचार्य ने ऐसा स्वीकार नहीं किया क्योंकि उनकी प्रतिज्ञा उनके लिए सर्वोपरि है। बिल्कुल इसी प्रकार से आपका भी सम्मान
और आपका न्याय दुनिया की किसी भी
और बात से पहले आना चाहिए।
अपनी इज़्ज़त अपने ही हाथ में होती है।
मनुष्य का जीवन आपको केवल डर के
और सहम के रहने के लिए नहीं मिला है
ये जीवन आपको मिला है सही का साथ देने के लिए जहां आवश्यकता है वहाँ बोलने के लिए।
और किसी भी रूप में आई कठिनाई का सामना कर उसे जड़ से नष्ट करने के लिए।
चुनाव करना आपका जन्म सिद्ध अधिकार है।
आप क्या चुनते हैं, ये आपके ऊपर निर्भर करता है
किंतु ये अवश्य याद रखेगा कि उस चुनाव का परिणाम केवल और केवल आपको ही भुगतना पड़ेगा।
फिर चाहे वो चुनाव गलत हो या सही।

उदाहरण के तौर पर -
धनानंद ने बहुत अत्याचार किए लोगों पर
किंतु अंत में जीत सच्चाई की ही हुई
और आचार्य चाणक्य और चंद्रगुप्त की भांति

यदि आप सही का साथ देते हैं
तो अवश्य ही नियति भी आपका साथ देगी और अवश्य ही आप भी अपने लक्ष्य तक जरूर पहुंचेंगे।

भले ही आप सही के मार्ग पर क्यों ना चल रहे हो
किंतु कठिनाइयां अवश्य आएंगी और जब एसा हो तो आपको रुकना नहीं है आपको अपना साहस नहीं छोड़ना है आपको किसी भी सतीथी में हार नहीं माननी है , भले ही आपको मुश्किल का सामना क्यों ना करना पड़े किंतु आप हार नहीं मान सकते।

क्योंकि ये नियति ने आपके लिए लिखा ही नहीं है। आपके लिए लिखी गई है जीत
आपके लिए लिखी गई है विजय
जो केवल और केवल आपको अपने शत्रुओ को पराजित करने के बाद ही मिलेगी।

इसीलिए इन राक्षस रूपी पापियों का सामना कर
इन सारी कठिनाइयों का सामना कर अपने लक्ष्य की ओर अपने रास्ते पर आगे बढ़ते चले जाएँ।

6 सच के लिए आवाज़ उठाओ

फांसी की जगह पर जहां पर आचार्य चाणक्य
और उनके सहायक को मृत्युदंड दिया जाने वाला था, वहां पर धनानंद और आचार्य का वार्तालाप सुन सहायक ने बोला कि - ये सब उस उद्दंड बालक चंद्रगुप्त की वजह से हो रहा है।

फांसी देने वाला व्यक्ति
आचार्य चाणक्य और उनके सहायक
का सर धड़ से अलग करने ही वाला था कि
चंद्रगुप्त ने अपनी चतुराई से
अस्तबल में जाकर सारे घोड़ों को बाहर निकाल दिया और घोड़ों की भागम भाग में सभी लोग
वहां पर भागने लगे और उसी भागम भाग के बीच चंद्रगुप्त ने जाकर आचार्य चाणक्य और उनके सहायक को छुड़वा दिया।

किंतू जैसे ही धनानंद के सैनिक
आचार्य चाणक्य के पीछे आने लगे
तो चंद्रगुप्त ने

मार्ग में पहले ही बाधा उत्पन्न कर रखी थी
तेल डालकर और वहां पर उसने आग लगा दी।
जिसके कारण
सभी सैनिक आगे नहीं आ पाए।

और चंद्रगुप्त फिर वहां से चला गया।
और आचार्य चाणक्य ने
धनानंद को पुकार लगाकर कहाँ -

धनानंद !

ये तेरे वंश के
विनाश का आरंभ है।

इस बालक ने जो आज किया है।
वो तेरे आने वाले कल की एक मात्र झलक है।

मैं प्राण करता हूं।

यही बालक
तेरा ही नहीं तेरे पूरे कुल का सर्वनाश करेगा।

इन्सान को हार तब तक नहीं माननी चाहिए
जब तक वो हार ना जाए।
और हार तब तक नहीं होती, जब तक अंत नहीं होता और जब तक अंत नहीं होता तब तक
दोबारा वापसी की संभावनाएं बनी रहती है।

बिल्कुल इसी प्रकार से चंद्रगुप्त ने
ये साबित कर दिया
कि किस प्रकार से
वो एक सफल राजा बनने के योग्य है
और किस प्रकार से उसने ना केवल
आचार्य चाणक्य की जान बचाई
अपितु साथ ही साथ हमारी मातृभूमि की
आज़ादी के लिए पहला कदम भी रखा।

इस सारी स्थिति से हमें ये सीखने को मिलता है कि किस प्रकार से एक इंसान को
स्थिति के अनुसार अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिए और किस प्रकार से हर मनुष्य की
ज़िम्मेदारी है कि
उसे सच के लिए तन के खड़े होना चाहिए
क्योंकि अगर आज आप आवाज़ नहीं उठाएंगे
तो आप शायद आगे कभी कोई आवाज़ नहीं उठा पाए
और आपका आवाज़ उठाना
और हर एक व्यक्ति का आवाज़ उठाना
अत्यंत ही आवश्यक है

अन्यथा
अगर कोई ये सोचने लगे
कि हमारे लिए भी कोई और आवाज़ उठाएगा
तो कभी भी कोई भी
सच की लड़ाई लड़ ही नहीं पाएगा

क्योंकि इस सच के युद्ध में
जीत उसी की होगी

जो आगे बढ़कर सच के लिए मर मिटने को तैयार होगा

ना कि पीछे छुप कर दुबक कर बैठने को।

सच का रास्ता कठिन अवश्य है
पर असंभव नहीं है।
बस मन में विश्वास
और दृढ़ इच्छा शक्ति हो
तो जीत आपकी ही होगी।

7 अपने क्रोध को सही दिशा दो

चंद्रगुप्त सारे स्वर्ण के सिक्के लेकर
अपने गांव गए अपने माँ के पास। किंतु जैसे ही
वो वहाँ पहुंचा तो उसने जाकर देखा
कि उसके पूरे गांव में आग लगी हुई है।
और कोई भी जीवित नहीं बचा है।

आचार्य चाणक्य उसका पीछा करते हुए वहाँ पहुंचे वहाँ पर चंद्रगुप्त का एक जानने वाला व्यक्ति था जिसकी बस मृत्यु होने ही वाली थी। चंद्रगुप्त ने उससे पूछा कि बाबा ये सब क्या हो गया तो उन्होंने जवाब दिया कि मगध के सैनिकों को पता चल गया था कि हम लोग क्षत्रिय हैं। चंद्रगुप्त ने आचार्य से कहा कि - देखा मेरी सारी बस्ती जल गई और मेरी माँ भी पता नहीं , ये सब आपकी वजह से हुआ है।

क्यों पकड़ कर ले गए थे मुझे
अगर आज मैं यहाँ होता तो ,

आचार्य चाणक्य ने कहा - तो क्या कर लेते तुम ? क्या कर लेते तुम चंद्रगुप्त ?
यदि मैं तुम्हें अपने साथ लेकर ना गया होता
तो हो सकता है कि तुम भी ,
नियति के इशारों को समझो चंद्रगुप्त !

देखो अपने चारों ओर ! कौन है इस विनाश का कारण ? किसने जलाई है तुम्हारी बस्ती
चंद्रगुप्त ने पूछा - कौन है वो ?
आचार्य चाणक्य ने उत्तर दिया वही जिसके पिता ने मेरे स्वाभिमानी विद्वान पिता की निर्मम हत्या की थी। वही जिसने लाखों मगध वासियों को तिल- तिल कर मरने के लिए विवश कर दिया है।
वही जिसने भगध की गरीब प्रजा पर आजा इतने कर लगाए हैं कि तुम जैसे कितने ही मासूमों को जीने के लिए स्वयं को बेचना पड़ रहा है। मगध नरेश - घनानंद ! वही है इस विनाश का कारण।
ये सुनकर चंद्रगुप्त निकल पड़ा धनानंद को मारने तब आचार्य चाणक्य ने उसे रोक कर कहा -

रुक जाओ चंद्रगुप्त ! कहाँ जा रहे हो ?
चंद्रगुप्त ने उत्तर दिया - पाटलिपुत्र ! बदला लेने ! धनानंद को मारने ! ये सुन आचार्य चाणक्य ने चंद्रगुप्त को कहा कि -

अपने क्रोध को सही दिशा दो चंद्रगुप्त !
पाटलिपुत्र की राह तक्षशिला होकर पहुंचती है।
तुम्हारे इस बदले में मैं तुम्हारे साथ हूँ।

बिना तैयारी के कोई जंग नहीं जीती जाती
संघर्ष की राह इतनी आसान नहीं होती।
कठिनाइयों का सामना अवश्य करना पड़ेगा।
चाहे फिर वो कोई भी रास्ता क्यों ना हो।
यदि आपको पता चले की दुश्मन कौन है

और आपको सारी बातों का भली-भांति
अनुभव हो जाए तो फिर सबसे पहले आपकी जिम्मेदारी बनती है उस शत्रु के खिलाफ
जानकारी एकत्रित करने की उसके बारे में पता करने की
उसकी क्षमताए जानने की ताकि आप खुदको
इस तरह तैयार कर सके कि आप उससे युद्ध कर पाए और उस पर विजय पा पाए।
ये आपकी खुद की जिम्मेदारी है
क्योंकि युद्ध के पहले की गई तैयारी ही
युद्ध के फल का परिणाम निर्धारित करती है।
इसीलिए युद्ध से पहले युद्ध के लिए तैयारी करना अत्यंत ही आवश्यक है।
जैसे ही चंद्रगुप्त को ये पता चला
कि किस तरीके से धनानंद अनेको लोगों की मृत्यु का कारण है वैसे ही क्रोध में आकर उसने
ये निर्णय ले लिया कि वो अभी ही , उसी समय
धनानंद से बदला लेने जाएगा।
किंतु अभी भी वो एक बालक ही था।
और जब शत्रु आपसे बड़ा हो
तो बुद्धि से काम लेना
अनिवार्य होता है।

इसीलिए आचार्य चाणक्य ने बोला
कि मगध की राह तक्षशिला से होकर जाती है

क्योंकि वाहा वे उसे उचित तैयारी करवाएंगे।

उसे इस काबिल बनाएंगे कि वो अपने युद्ध
खुद लड़ सके और केवल अपना ही नहीं
बल्कि पूरे मगध का और
अपनी पूरी मातृभूमि का उद्धार कर सकें।

बिल्कुल इसी प्रकार से आपको भी
ऐसा कोई निर्णय क्रोध में नहीं लेना है !

अपितु अपनी भूल और अपनी कमियां

पता चलने के बाद आपको उन पर काम करना है।
और अपने आप को और बेहतर बनाना है
अपने विरोधी दल का सामना करने के लिए।

8 हौसला रखो !

क्रूरता के नशे और अपनी धुन में लिप्त
धनानंद को केवल और केवल
अपने मतलब की ही बात समझ आती थी।

उसे मातृभूमि की कोई चिंता नहीं थी।
इसके तहत आचार्य चाणक्य ने धनानंद के विरुद्ध उसे हराने का एक मार्ग निकाला किंतु अहम वक्त पर चंद्रगुप्त के मित्र ने उसे धोखा दे दिया जिसके परिणाम स्वरूप आचार्य चाणक्य और चंद्रगुप्त को
हार का सामना करना पड़ा। और एक समय ऐसा भी आया जब धनानंद के विरुद्ध अपने पहले विधिवत मिले युद्ध की पराजय ने आचार्य चाणक्य को
भीतर से तोड़ दिया था।
जब चंद्रगुप्त आचार्य चाणक्य को वैध के पास लेकर गए तो वेद ने बोला कि औषधियों की अपनी एक सीमा होती है। व्यक्ति उपचार से तभी ठीक हो सकता है जब मन से ऐसा चाहे किंतु यदि किसी ने जीने की इच्छा ही छोड़ दी हो यदि मन में निराशा घर कर जाए और जीने की इच्छा ही मर जाए
तो ऐसे रोगी को मात्र औषधियों से कैसे
ठीक किया जा सकता है ?

चंद्रगुप्त ने अपने अभियान की असफलता के बाद कई दिनों तक अपने असफल अभियान के
बिखरे सूत्रों को ढूंढने में इस आशा के साथ बताया कि क्या पता किसी प्रकार से अभियान को पुनर्जीवित करने का कोई मार्ग मिल जाए।

किंतु आचार्य चाणक्य तो जैसे जड़ हो गए थे
ना कुछ बोलते ना कुछ कहते।

बस चुप !
और चुप भी ऐसे की
मानो अपने जीवन से निर्लिप्त हो गए हों।
चंद्रगुप्त के लिए उनका एक शब्द भी सुन पाना
जैसे सपना बन चुका था।

आचार्य ने मन और बुद्धि दोनों से
स्वस्थ होने के प्रयास छोड़ दिये थे
आचार्य की आत्मा में सकारात्मक ऊर्जा
लाने के लिए चंद्रगुप्त भद्रभट से पूछते हैं
कि ऐसा कैसे संभव हो पाएगा ?

तब भद्रभट चंद्रगुप्त को आचार्य चाणक्य के पिता के बारे में बताते हैं। और ये समझाते हैं कि
किस प्रकार से आचार्य चाणक्य के पिता के साथ अनुच्छेद हुआ था। और ये सब बताते हुए
वे चंद्रगुप्त को आचार्य चाणक्य के पिता
के द्वारा लिखी गई एक पुस्तक थमा देते हैं।
चंद्रगुप्त वो पुस्तक पढ़ने के बाद
आचार्य चाणक्य के पिता द्वारा लिखी गई
एक कविता को आचार्य चाणक्य को
प्रोत्साहित करने के लिए सुनाते हैं।

और आचार्य चाणक्य दोबारा से
अपने उन्हीं वचनों को याद कर
अपनी मातृभूमि के प्रति
अपनी ज़िम्मेदारी को निभाने के लिए
फिर से एक बार पुनः
इस अभियान में जुट जाते हैं।
और इस बार एक बेहतरीन रणनीति बनाकर
अखंड भारत का सपना सच कर दिखाते हैं।

आचार्य के पिता के वचनों ने
उन्हें ये याद दिलाया कि किस प्रकार से
उन्हें हिम्मत नहीं हारनी है और अपने हिम्मत और साहस को एकत्रित कर फिर से मुकाबले में खड़े उतरना है।
फिर से अपनी मातृभूमि के लिए
अपनी जान दांव पर लगा देनी है।
फिर चाहे कुछ भी क्यों ना हो जाए।
बिल्कुल उसी प्रकार से
आपको भी चाहे परिस्थिति कैसी भी क्यों ना हो आपको ये हमेशा याद रखना है कि किस प्रकार से आप अपनी मातृभूमि के प्रति समर्पित है
और सही का साथ देना
आपका सबसे पहला धर्म बनता है।
चाहे कितनी ही कठिनाईयो का ,
कितनी ही मुश्किलों का सामना क्यों न करना पड़े

किंतु आपको हमेशा अटल रहना है। अपने वचनों पर , आपको अटल रहना है अपनी मातृभूमि के सम्मान पर। आपको अटल रहना है अपने लिए
और वो बनकर दिखाना है वो करके दिखाना है
जो आप करना चाहते हैं सबका अच्छा करने के लिए और इस दुनिया को
एक बेहतर जगह बनाने के लिए।
हाँ हो सकता है ये लक्ष्य आपको देखने में
अभी बहुत बड़ा लगे
किंतु धीरे-धीरे , बूंद-बूंद करके ही
जिस प्रकार से सागर भरता है
उसी प्रकार से आपका योगदान
इस दुनिया को बेहतर बनाने में
बहुत ही महत्वपूर्ण रहेगा
क्योंकि अगर हर कोई यही सोचने लग गया
कि मेरा योगदान बहुत ही छोटा सा है
तो कभी भी ये दुनिया
एक बेहतर जगह नहीं बन पाएगी।
आपको इस बात का ध्यान रखना है कि
दुविधाएं चाहे कितनी ही क्यों ना हो जाए
किंतु आपको उन दुविधाएं का सामना कर
अपने लक्ष्य तक पहुंचकर ही दिखाना है।
और ये आपको किसी और को दिखाने के लिए नहीं अपितु सबसे पहले अपना जीवन सुधारने के लिए करना है क्योंकि यदि आपका अपना ही जीवन नहीं सुधरेगा तो आप कैसे सुधार पाएंगे
बाकी लोगों का जीवन ?
तो आज ही अपनी इस जिंदगी को
एक नई दिशा प्रदान करें।
और लग जाए किसी एक लक्ष्य को हासिल करने में कोई एक ऐसा लक्ष्य जो आपकी आमदनी भी बड़ाए और जो लोगों की सहायता भी करें
और इस दुनिया को बेहतर जगह भी बनाए,
क्योंकि खाली बैठना आपके लिए वाजिब नहीं है। आपका काम है इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाना और ये कोई साधारण काम नहीं है।
मूल्य कई चुकाने पड़ेगे इस काम के लिए

और हाँ हो सकता है की कठिनाईयाँ आपका रास्ता रोके पर आपको बिना रुके आगे बढ़ते चले जाना है। चाहे कितनी ही ठोकरे क्यों ना खानी पड़े
पर आपको रुकना नहीं हैं।
क्योंकि रुकने का विकल्प आपके पास है ही नहीं,
वो विकल्प उन्हें दिया जाता है जो कायर होते हैं।
आप कायर नहीं है। इसीलिए
रुकने का विकल्प आपको नहीं दिया गया हैं।
आपके पास केवल और केवल एक ही लक्ष्य है
और वो लक्ष्य ये है की आपको अपने चुने गए अभियान को पूर्ण करना हैं। वो अभियान कुछ भी हो सकता है, वो पढ़ाई करना हो सकता है। पढ़ लिखकर कुछ ऐसा बनना जिससे हर किसी की सहायता हो सके , हो सकता है वो का अभियान आपके लिए किसी का इलाज कराना , डॉक्टर बनना या जो भी आप बनना चाहते हैं वो बन के दिखाना , हर के लिए ,
हार का अभियान अलग-अलग हो सकता है,
किंतु उद्देश्य हमेशा एक ही रहता है समाज का भला।
और अपने साथ-साथ पूरे समाज का उद्धार
तभी हो सकता है जब आप खाली ना बैठकर
कुछ ना कुछ करते रहे और अपने जीवन को
एक सही उद्देश्य की ओर आगे बढ़ाते रहें।
क्योंकि खाली बैठने वाले लोग
ऐसे लोग जो देश की आमदनी नहीं बढ़ाते ,
ऐसे लोग जो कुछ अच्छा करने की कोशिश नहीं करते , ऐसे लोगों को ये समझ ही नहीं आता कि वो कैसे गलत मार्ग पर चल रहे हैं।
उनकी भूल मात्र इतनी सी है कि उन्हें कोई दिशा दिखाने वाला नहीं मिला , अगर आप भी ऐसे लोगों में से थे अब तक तो कोई बात नहीं।
अब आचार्य चाणक्य के कहे हुए वचनों से प्रेरित होकर आपको भी एक सही दिशा पकड़नी है
और लग जाना है अपने इस नए अभियान में।
रोजगार के अभियान में , अपनी जिंदगी को बेहतर बनाने के अभियान में और इस देश को आगे बढ़ाने के अभियान में।

9 जीत सत्य की ही होती है।

पर ऐसा क्या था
जो आचार्य चाणक्य के पिता के साथ हुआ था ?

ये हैं आचार्य चाणक्य के पिता की कहानी -

आचार्य के पिता जी -
आचार्य चाणक
पाटलिपुत्र के
सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माने जाते थे।

आचार्य चाणक के विचार महापद्मानंद
और उनके कर्मचारियों को बिल्कुल नहीं बहाते थे।

आचार्य चाणक के मित्र अमात्य षतार ने स्त्रियों के अपहरण की बात महापद्मनंद के समक्ष उठाई थी।
जैसी ही आचार्य चाणक ने अमात्य षतार के बंधी बनाए जाने की बात सुनी तो वो क्रोधित हो गए।

उसके बाद आचार्य चाणक महापद्मानंद के महल जा पहुंचे और वहाँ जाकर उन्होंने कहा कि -

महापद्मनंद !
आज तुमने मर्यादा की सभी सीमाएं लांग दी है।
जिस राज्य का तू अधिकारी हैं
तूने उसी को लूटा

अपने खुद के मनोरंजन के लिए
तूने स्त्रियों का अपहरण करवाया
तूने अपनी प्रजा पर करो का अंबार लगा दिया।
किसानों पर भी ऊपर से अधिक कर लगाया।
जिस लकड़ी से अंतिम संस्कार होता है
तूने उस पर भी कर लगा दीया !
और आज एक ब्राह्मण ने तुझे तेरा
करता याद दिलाया
तो तूने उसे बंधी बना दिया

महापद्मनंद !
तेरी बुद्धि का संतुलन जा चुका है।
पागल हो गया है तू !

महापद्मनंद ने बोला -
जितना चिल्लाना है चिल्ला ले चाणक !

पीछे मुड़ कर देख अपने मित्र की ओर
कैसे दुख और कष्ट में खड़ा है
तेरे साथ भी वही होगा
जो तेरे परम मित्र के साथ हो रहा है।

आचार्य चाणक कहते हैं कि -
तूने ब्राह्मण के शब्दों की शक्ति को समझा नहीं है।
हमारी वाणी धर्म की वाणी है।
हमारे शब्द साधारण प्रजा को ज्ञान देते हैं।
प्रेरणा देते हैं , इनमें शक्ति भरते हैं।

जिससे वे किसी भी राक्षस को कुचल कर रख दे।
जिस दिन प्रजा को पता चलता है
कि वो अकेली नहीं है और उनके दुख
उनकी पीड़ा कोई बाट सकता है।
जब उन्हें पता चलता है कि वे ठगे जा रहे हैं।
उन पर समान रूप से अत्याचार हो रहे हैं।

तब सब एक हो जाते हैं।
तब समाज में होती है क्रांति।

ऐसा बोलने पर महापद्मानंद ने आदेश दिया -
सैनिकों घेर लो इसे।

महापद्मनंद ने कहा -
ध्यान से सुन !
जब भी कोई हमारे सामने यूं तन कर खड़ा होता है। हमें हमारी ही सीमा बताने का दुस्साहस करता है
तो पता है क्या होता है ?

तो हम उसे फल स्वरुप क्या देते हैं ?
मृत्युदंड !

चाणक को इसी समय इसी स्थान पर
मृत्यु दंड दिया जाए।

और इतना ही नहीं आचार्य चाणक को
मृत्युदंड देने के बाद महापद्मनंद ये भी बोलते हैं कि इस चाणक के अंतिम संस्कार के लिए
ना तो कोई लकड़ी देगा और ना ही कोई अगनी
पड़े रहने दो उसके शव को यूंही।

इसका शव पूरे पाटलिपुत्र को याद दिलाएगा
कि महापद्मनंद के विरुद्ध खड़े होने का
क्या परिणाम होता है।

किंतु सत्य तो यही है कि सच के विरुद्ध खड़े होने का परिणाम भुगतना ही पड़ता है।

हाँ समय अवश्य लगा लोगों की आंखें खोलने में उन्हें असत्य के विरुद्ध खड़े होने की शक्ति देने में और इस सत्य की लड़ाई को जीतने में।

किंतु जीत अंततः सत्य की ही हुई।

और जो कथा आचार्य चाणक और महापद्मनंद से शुरू हुई थी उसे आचार्य चाणक के पुत्र

आचार्य चाणक्य ने धनानंद जैसे एक पापी राजा को हटाकर , चंद्रगुप्त को राजगद्दी पर स्थापित कर
अखंड भारत का सपना पूर्ण किया।
और इस देश को स्वतंत्र बना
हमें अपनी मातृभूमि पर
खुशी से रहने का अवसर दिया।
सच का स्थान सबसे ऊपर है और यही सच है।
और अगर यही सच आपके साथ है
तो यही सच आपको हिम्मत देगा आगे बढ़ने की
और यही सच्चाई आपको
आगे तक ले कर भी अवश्य जाएगी।
सच में बहुत ताकत होती है
और इस दुनिया में कोई भी ऐसा नहीं है
जो उस ताकत के आगे खड़े होने का हौसला रख पाए। क्योंकि सच बाहर आकर ही रहता है
और उस सच के लिए लड़ने वाले लोग अवश्य ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।
चाहे कीमत कुछ भी क्यों ना चुकानी पड़े।
किंतु इस सत्य और असत्य की लड़ाई में
जीत हमेशा सच की ही होती है।
एक व्यक्ति चाहे अपनी एड़ी चोटी का जोर क्यों ना लगा ले किंतु होगा वही जो नियति चाहेगी।

अगर कोई व्यक्ति आपसे बेमतलब की लड़ाई
लड़ रहा है , आप को नीचा दिखाने के लिए , आपके उत्साहित मन को कुचलने के लिए तो आप अवश्य ये याद रखें की ऐसे व्यक्ति आपको जीवन में अनेकों मिलेंगे किंतु आपको अपना साहस नहीं छोड़ना है।
आपको हिम्मत रखनी है
और ये याद रखना है
की आप अकेले नहीं है।
आपके साथ खुद नियति है
और नियति जिसके साथ होती है
उसका कभी भी बुरा नहीं हो सकता।
फिर चाहे कोई भी कुछ भी करने की
कोशिश क्यों ना कर ले।

क्योंकि सच का साथ देने वाले लोग
कभी नहीं हारते और यही इतिहास भी हमें बताता है।
फिर चाहे उस युद्ध को लड़ने के लिए
कितनी ही ताकत लगानी पड़े। कितना ही मूल्य क्यों ना चुकाना पड़े किंतु आप वो युद्ध नहीं हारेंगे।

क्योंकि आप हार ही नहीं सकते।
आपका हारना लिखा ही नहीं है।

हार तो उसकी होगी जो आपको
तोड़ने की कोशिश करेगा।
हार तो उसकी होगी
जो अन्याय के साथ सत्य का
गला दबाने की कोशिश करेगा।
हमारा इतिहास भी हमें यही सिखाता है
कि किस तरीके से हमें अपनी आवाज़ उठानी चाहिए फिर चाहे वो कोई भी छोटी से छोटी बात क्यों ना हो। क्योंकि यही छोटी बातें आगे जाकर बहुत बड़ी बन जाती हैं और यदि आज ही आपने अपनी आवाज़ उठानी शुरू नहीं करी तो कल जाकर यही छोटे मुद्दे बहुत बड़े बन जाएंगे। और तब आपकी कोई भी नहीं सुनेगा क्योंकि आपने तब उन बातों को नहीं रोका जब वो बहुत छोटी थी क्योंकि आपने तभी उन लोगों को गलती करने से नहीं रोका जब वो सबसे छोटी अपनी पहली गलती कर रहे थे। क्योंकि इसी प्रकार से
धीरे-धीरे इंसान अपना अधिकार खोता है।
लोगों पर जब वो सवाल नहीं उठाता तब।
अपनी आवाज़ नहीं उठाता तब।
आपको अपनी आवाज़ उठाते रहना है
जब भी कुछ गलत हो। उस गलत को सहना नहीं है। उसे वहीं रोकना है। अन्यथा ये गलत होता जाएगा , होता जाएगा और इतना होता जाएगा
कि इसे संभालना अत्यंत ही कठिन हो जाएगा। इसलिए अपनी आवाज़ उठाएं।
और यदि किसी के भी जीवन में कुछ भी गलत होता है तो उसके खिलाफ बोलने की हिम्मत रखे।
यदि एक बार इस गलत को छूट मिल गई।
इस गलत को बढ़ावा मिल गया
तो फिर ये गलत रुकेगा नहीं।

और ना ही ये थमेगा फिर तो बस इस गलत का तूफान ऐसा आएगा कि सभी को बाहर लेकर जाएगा।
वो अपनी गलत बातों की हवा
की चपेट में सभी को बहा कर ले जाएगा।

सफल या असफल होना आपके हाथ में नहीं है
वो नियति के हाथ में है।
आपके हाथ में है आवाज़ उठाना और प्रयास करना
और यही बोहोत है।

क्योंकि कोशिश करने से क्या नहीं होता ?

और आपके यही प्रयास एक दिन
आपको अवश्य सफल बनाएंगे।
फल देना नियति के हाथ में है
किंतु क्या हम प्रयास करना छोड़ दें ?
अगर हम एक बार हार जाए तो ?
नहीं ! प्रयास कभी भी रुकने नहीं चाहिए
वे निरंतर होनी चाहिए।
तभी जाकर तो इस दुविधा का कोई अंत होगा
तभी जाकर तो आप इस दुनिया पर
अपनी छाप छोड़ पाएंगे और तभी जाकर तो
सभी में सत्य को बोलने
और उसे स्वीकार करने की ताकत आपाएगी।

इस सत्य और असत्य की लड़ाई में
इस भेदभाव की लड़ाई में
इन राक्षसों से हम इंसानों की लड़ाई में
जीत सच्चाई की ही लिखी है।

किंतु शर्त यही है -

कि चाहे कितनी बार ही हार क्यों ना मिले
पर आपको प्रयास नहीं छोड़ने है

आपको इन राक्षस रूपी इंसानों का सामना कर

इनके अपराधों का पर्दाफाश करते रहना है
अन्यथा ये रुकेंगे नहीं और ,
और ज़्यादा बढ़ते जाएंगे और फैलते जाएंगे
और बाकी बचे अच्छे इंसानों को भी अपने वश में कर अपने जैसा दुराचारी बनाते जाएंगे।
इसलिए
आप रुके नहीं
प्रयास करना ना छोड़े
और सच के साथ खड़े रहे।

और मेरी यही आशा है कि

आचार्य चाणक्य की ये कहानी

आपको सही रास्ता दिखाएगी

और आपको
आपके चुनाव करने में सहायता करेगी।

तो इन मानव रूपी
राक्षसों का सामना करने के लिए
तैयार हो जाएं

और आज ही से
इस बदलाव की घड़ी में
आवाज उठाएं
और सही का साथ दें।

एक शिष्य का आचार्य चाणक्य को नमन।

गुरुः ब्रह्मा
गुरुर विष्णु
गुरुर देवो महेश्वरः
गुरु साक्षात परब्रह्म
तस्मै श्री गुरुवे नमः

सरल शब्दों में -
गुरुः ब्रह्मा : गुरु ही ब्रह्मा हैं ।

गुरुर विष्णु : गुरु ही विष्णु हैं ।
गुरुर देवो महेश्वरः : गुरु ही महेश्वर यानि शिव हैं ।
गुरु साक्षात परब्रह्म : परब्रह्म, जोकि सृष्टि रचयिता हैं और सभी देवो में श्रेष्ठ हैं, गुरु उनके समान हैं ।
तस्मै श्री गुरुवे नमः : हम उन गुरु को हमारा नमन करते है ।